शोध-सारांश

मुख्यधारा से कटे और हाशिये पर ढकेले गए आदिवासियों का और उनमें भी आदिवासी स्त्रियों का प्रश्न वैश्वीकरण के नारों को चुनौती देता हुआ उठ खड़ा हुआ है जिसके अनुसार "स्थानीयता के प्रति सम्मानित दृष्टि के बगैर हम वैश्विक होने का दावा नहीं कर सकते।" आदिवासी स्त्रियों के सभी सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक, आंदोलनात्मक और रचनात्मक परिदृश्य की सभी समस्याओं तथा उन समस्याओं को लेकर उठने वाले विवाद को सामने रखते हुए भविष्य के प्रति सकारात्मक और प्रगतिकामी दृष्टिकोण से उसका समाधान प्रस्तुत करने में निर्मला पुतुल की कविताओं की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत शोध चार अध्यायों में विभक्त है। पहले अध्याय में समकालीन आदिवासी कविताओं की पृष्ठभूमि और परिप्रेक्ष्य का अध्ययन है। समकालीन कविता की नजर से क्षेत्रीय भाषाओं में अवश्य आदिवासी जनजीवन के विविध पक्षों पर विचार किया गया किंतु हिंदी साहित्य की एक धारा के रूप में आदिवासी कविता अभी प्रारंभिक दौर में प्रवेश कर रही है। हिंदी कविता में पहली आदिवासी दस्तक सुशीला सामद हैं, जिनका पहला हिंदी काव्य संकलन 'प्रलाप' 1935 में प्रकाशित हुआ। समकालीन आदिवासी कविता के इस प्रारंभिक कदम को आगे बढ़ाने में तमाम आदिवासी और गैर आदिवासी कवियों का योगदान है जिनमें अनुज लुगुन, हरिराम मीणा, निर्मला पुतुल, सरिता बड़ाईक इत्यादि हैं। आदिवासी साहित्य क्या है। आदिवासियों की समस्याएँ जो उपनिवेशकाल में साम्राज्यवाद और सामंतवाद के गठजोड़ से पैदा हुईं तथा दूसरी, जो आजादी के बाद देसी शासन की जनविरोधी नीतियों और उदारवाद से, इनका बखूबी वर्णन आदिवासी कविताओं में मिलता है। इन कविताओं के माध्यम से आदिवासी समाज की स्थिति, उनके इतिहास को जाना जा सकता है। उनके पर्व-त्यौहार-पूजा, प्रकृति, नृत्य-संगीत-मनोरंजन का सहज चित्र इन कविताओं में है। इन कविताओं का प्रस्थान उस दिशा की ओर है जहाँ समाज की मुख्यधारा से बाहर, हाशिये पर ढकेल दी गई जातियाँ, वर्ग, समुदाय एवं दबी कुचली अस्मिताएँ सम्पूर्ण प्राणपन केसाथ अपनी पहचान और अधिकार के लिए संघर्षरत हैं। दूसरे अध्याय में समकालीन आदिवासी कविताओं में स्त्री की स्थिति का अध्ययन है। माना जाता है कि आदिवासी समाज में स्त्रियाँ अन्य समाज की अपेक्षा अधिक स्वतंत्र होती हैं। यह समाज मातृसत्तात्मक रहा है परन्तु बाहरी घुसपैठ और अपनी अंधविश्वासी रूढिवादिता की वजह से स्त्रियों की स्थिति में काफी अंतर आ चुका

है – इसी अंतर व स्थिति को कविताएँ स्पष्टतः सामने रखती हैं। आदिवासी इतिहास में जहाँ सिनगी दई जैसी वीरांगना थी जो लड़ाई के मैदान में अकेली नजर आती है तो वहीं जारवा स्त्री की क्या स्थिति है समाज में, पहाड़ी स्त्री किस प्रकार धान रोपती है पीठ पर बच्चे को चादर में बाँधकर, घरेलू स्त्री, महानगरों में काम करने वाली आदिवासी स्त्री इत्यादि के माध्यम से आदिवासी अस्मिता के वृहद् वृत्त में स्त्री अस्मिता की तलाश करनेवाली कविताएँ एक व्यापक जन-समाज की मुक्ति तलाश रही हैं। अधिकांशतः स्त्री कविता की पहचान पितृसत्तात्मक व्यवस्था से मुक्ति में पढ़ी जाने वाली कविताओं के रूप में की जाती है किंतु यहाँ आदिवासी समाज का हाशियाकरण उसे एक अतिरिक्त आयाम देता है। तीसरे अध्याय में निर्मला पुतुल का परिचय एवं उनकी कविताओं में स्त्री का अध्ययन है। अपनी कविता के माध्यम से वह स्त्री अस्मिता के उन तमाम प्रश्नों पर विमर्श करती हैं जो अभी तक अनछुए एवं अनसुलझे रहे हैं। तमाम ऐतिहासिक प्रतीकों सिनगी दई चुड़का सोरेन, सजोनी किस्कू, पकलू मराण्डी के माध्यम से स्त्री की दशा का स्पष्ट चित्रण किया है। उनके कविता संग्रह 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' और 'बेघर सपने' में संग्रहित कविताओं को इस शोध में सम्मिलित किया गया है। निर्मला पुतुल की कविताएँ झारखंड के सांस्कृतिक और समकालीन जीवन के प्रामाणिक पाठ की तरह आती हैं, जिसका एक उप पाठ स्त्री संवेदना और संघर्ष के विस्तार के रूप में दिखाई पड़ता है।चौथे अध्याय में निर्मला पुतुल की कविताओं की भाषा और शिल्पगत वैशिष्ट्य पर चर्चा की गई है। निर्मला पुतुल की कविताओं में शिल्प का विधान और आदिवासी समाज का ताना-बाना अत्यंत सहज रूप में सामने आया है। जीवन संघर्ष की रगड़ से फूटी काव्य भाषा में जीवन संग्राम भरा गद्य भरभराकर फूटता है। इनकी कविताओं की भाषा अत्यंत सहज, लोक संस्कृति से जुड़े भाव-प्रवण शब्द, संवादशैली, आत्मकथन शैली है। निर्मला पुतुल के रचनाकर्म से अध्ययन के विश्लेषण से ज्ञात होता है कि उनकी रचना के मूल में आदिवासी जीवन का विशद अनुभवसंपदा, उसके प्रति उतनी ही गहरी संवेदना, निहायत स्थानीय भाषा एवं रचना शिल्प उनके प्रति मानवीय चिंताएं मौजूद हैं।

❑❑

Summary

The question of the tribal people, and that too, tribal women, cut off from the main stream, pushed to the verge, has been risen as a challenge to all the cries of globalization according to which "we cannot proclaim to be global without having a certain respectful vision towards the locality". Nirmala Putul's poems plays as important role in presenting a solution to all the problems; social, political, ideological, agitational and creative landscape, and the conflict raised due to these problems of tribal women by having a positive and progressive point of view towards future.

Submitted research is divided into four chapters. First chapter consist of the study of the background and perspective of contemporary tribal poetry. Thoughts have been given to the different aspects of tribal lifestyle present in the regional languages from the view of contemporary poetry, but tribal poetry is still entering in the beginning stage in the form of a Hindi literature stream. The first tribal mark in Hindi poetry is Susheela Saamad, who published her first poetry collection in Hind, 'Pralaap', in 1935, to carry forward the initial foothold in contemporary tribal poetry, contributions have been made by many tribal and non tribal poets like Anuj Lugun, Hariram Meena, Nirmala Putul etc. What is tribal literature? The problems of tribal people which are primarily created by the coalition imperialism and feudalism in the colonial era, and secondarily due to the anti-people policies on elected local government post independence, are described in tribal poems at great lengths. This poem provides a media to know about the present state and history of tribal society. Their festivities, rituals, nature, singing, dancing, entertainment are casually depicted in these poems. These poems leaves in a direction where the castes,

classes, communities and the neglected, deprived but proud souls are struggling with all their heart for their identity and rights.

Second chapter consists of the study of women position in contemporary tribal poetry. It is believed that women in tribal societies are more independent than women in other societies. This society has always been matriarchal but the foreign insurgence and the self blind faith in superstitions among the society has changed women position a lot; this very change in position is so clearly visible in these poems. When there was a warrior like Sijagi Dai who seems to stand alone in a battle field, there's also the state of Jarva women in a society, how a women from hill tribes sow rice, carrying her child on her back tied up in a sheet, or house wives, tribal women working in metropolitan cities, the poems about the women pride in the wide circle of trial pride, tends to be looking for the salvation of a vast majority of people. Mostly feminist poetry is identified as poems read as an act against patriarchal systems but here the pushing of tribal societies on the verges provided it with an additional dimension.

Third chapter consists of the introduction of Nirmala Putul and the study of women in her poems. She discusses all those questions yet untouched and unsolved about women pride through her poems. The state of women is clearly depicted through various historical figurines like Chudka Soren, Sajoni Kiskoo, Pakalu Marandi etc. Compiled poems from her collection of poems "Nagade ki tarah bajte shabd" and "Beghar Sapne" has been included in this research. Nirmala Putul's poems comes off as factual study of Jharkhand's cultural and contemporary lifestyle of which one chapter seems to be the extent of struggle and women sensitivity.

The language and structural specialty of Nirmala Putul's poems is discussed in chapter four. The order of structure and the Interwoven tribal society comes quite naturally in Nirmala Putul's poems. The essence of life long battle crypts into a spring of poetic language sprout out of life's struggles. Her poetical language is very casual, consisting meaningful words from folk culture and her style is conversational, biographical. The analytic study of Nirmala Putul's creative work shows that the vast experience of tribal life and deeply rooted sensitivity towards it, strictly local language and structural creativity, and their humanly concerns are ever present in the base of her creation.

❑❑